Masajide Madina (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत की किताब "आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात" की एक क़िस्त

हफ़्तावार रिसाला : 354
Weekly Booklet : 354

मसाजिदे मदीना

सफ़हात 22

फ़ारूक़े आ'ज़म और मस्जिदे क़ुबा 03

मस्जिदे शैख़ैन 13

मस्जिदे सज्दा 07

मस्जिदे मीनारतैन 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ् मक्के मदीने की ज़ियारतें" सफ़हा 295 ता 321 से लिया गया है।

मसाजिदे मदीना

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 22 सफ़हात का रिसाला : "**मसाजिदे मदीना**" पढ़ या सुन ले उसे मक्के मदीने की बा अदब हाज़िरी नसीब फ़रमां और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब जुमे'रात का दिन आता है, **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चान्दी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं : कौन यौमे जुमे'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।

(کنز العمال، 1/250، حدیث:2174)

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

चन्द मसाजिदे मदीना का ज़िक्रे ख़ैर

मदीनए मुनव्वरा और इस के गिर्दो नवाह में मुतअ़द्दिद ऐसी मसाजिद हैं जो **अल्लाह** के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब हैं।

हुसूले बरकत के लिये चन्द का ज़िक्र किया जाता है ताकि ज़ाइरीने आ़शिक़ीन इन्हें तलाश कर के जहां जहां मस्जिदें मिलें वहां नफ़्लें पढ़ें और जहां आसार न पाएं वहां ब निगाहे ह़सरत फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर के बरकत ह़ासिल करें और वहां दुआ़एं मांगें कि जहां जहां सुल्त़ाने कौनो मकां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई है वहां दुआ़ क़बूल होती है। ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इ़श्क़ो मस्ती में डूब कर कितनी प्यारी बात कही है कि "अरबाबे बसीरत (या'नी दिल की नज़र रखने वाले) येह जानते हैं कि इन (मक्के मदीने के) पहाड़ों और वादियों में असरे जमाले मुह़म्मदी और ज़ुहूरे कमाले अह़मदी से किस क़दर नुरानिय्यत ज़ाहिर हो रही है ! बेशक इस का सबब यही है कि इन तमाम जगहों में कोई भी ऐसा ज़र्रा नहीं जिस पर नज़रे मुबारक न पड़ी हो और वोह दीदारे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शरफ़याब न हुवा हो। (جذب القلوب، ص148)

आ के मैं रूह़ की हर तह में समो लूं तुझ को ऐ हवा तू ने तो सरकार को देखा होगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ मस्जिदे क़ुबा

मदीनए त़य्यिबा से तक़रीबन तीन किलो मीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ "क़ुबा" नामी एक क़दीमी गांव है जहां येह मुतबर्रक मस्जिद बनी हुई है, क़ुरआने करीम और अह़ादीसे सह़ीह़ा में इस के फ़ज़ाइ़ल निहायत एहतिमाम से बयान फ़रमाए गए हैं। मस्जिदे नबवी शरीफ़ से दरमियानी चाल से चल कर तक़रीबन 40 मिनट में आ़शिक़ाने रसूल मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते को कभी पैदल तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे क़ुबा** तशरीफ़ ले जाते थे।

(بخاری، 1/402، حدیث:1193)

उ़मरे का सवाब

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ना "उ़मरे" के बराबर है। (ترمذی، 1/348، حدیث:324) ﴿2﴾ जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे कुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी तो उसे "उ़मरे" का सवाब मिलेगा। (ابن ماجہ، 2/175، حدیث:1412)

फ़ारूक़े आ'ज़म और कुबा

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه मस्जिदे कुबा में दाख़िल हुए तो इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! मुझे इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ पढ़ने के बा'द चार रक्अ़तें पढ़ने से ज़ियादा महबूब है, और अगर येह मस्जिद दूर दराज़ अ़लाक़े में होती तब भी हम ऊंटों के जिगर फ़ना कर देते (या'नी इस की ज़ियारत के लिये हम ज़रूर सफ़र करते)। (کنز العمال، 7/62، حدیث:38174)

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कुबा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا हर हफ़्ते मस्जिदे कुबा में ह़ाज़िर होते थे। (مسلم، ص724، حدیث:1399)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿2﴾ मस्जिदे फ़ज़ीख़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे कुबा से मशरिक़ी जानिब एक किलो मीटर के फ़ासिले पर है। जब लश्करे इस्लाम ने बनी नुज़ैर का मुह़ासरा किया था उस वक़्त शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक ख़ैमा यहीं लगाया गया था और इस मक़ाम पर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 6 दिन नमाज़ें अदा फ़रमाई थीं। (وفاء الوفاء، 2/821) इस की यादगार में येह मस्जिद बनाई गई।

बा'ज़ लोग ग़लत़ फ़हमी के सबब इस को ''मस्जिदे शम्स'' कहते थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ ख़म्सा (या सब्आ़) मसाजिद

मदीनए त़य्यिबा के शिमाल मग़रिबी त़रफ़ सल्अ़ पहाड़ के दामन में पांच मस्जिदें एक दूसरे के क़रीब क़रीब वाक़ेअ़ हैं। दर अस्ल यहां पहले सात मसाजिद हुवा करती थीं। अ़रबी में सात को ''सब्अ़'' कहते हैं लिहाज़ा येह अ़लाक़ा ''सब्अ़ मसाजिद'' के नाम से जाना जाता था। अब पांच मस्जिदें रह गई हैं और अ़रबी में पांच को ''ख़म्सा'' कहते हैं इस लिये आहिस्ता आहिस्ता येह मक़ाम ''ख़म्सा मसाजिद'' के नाम से मशहूर हो गया। इन पांच में से एक मस्जिद ब नाम ''मस्जिदुल फ़त्ह़'' टीले पर वाक़ेअ़ है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ियां भी मौजूद हैं। ''ग़ज़वए अह़ज़ाब'' के मौक़अ़ पर (जिसे ग़ज़वए ख़न्दक़ भी कहा जाता है) हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदुल फ़त्ह़ के मक़ाम पर पीर, मंगल, बुध तीन दिन मुसलमानों की फ़त्ह़ो नुस्रत के लिये दुआ़ फ़रमाई, तीसरे दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान फ़त्ह़ की बिशारत मिली और ऐसी फ़त्ह़े कामिल ह़ासिल हुई कि इस के बा'द हमेशा दुश्मन मग़लूब (या'नी दबे हुए) रहे।

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते है : ''जब मुझे मुश्किल पेश आती है तो ''मस्जिदे फ़त्ह़'' में जा कर दुआ़ मांगता हूं तो मुश्किल ह़ल हो जाती है।'' मस्जिदुल फ़त्ह़ के इ़लावा दीगर छे मस्जिदों के नाम येह हैं : ﴾1﴿ मस्जिदे अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه (येह अस्ल में मस्जिदे अ़ली बिन अबी त़ालिब है) ﴾2﴿ मस्जिदे उ़मर बिन ख़त्ताब ﴾3﴿ मस्जिदे अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه येह माज़िये

क़रीब में मस्जिदे अबू बक्र सिद्दीक़ के नाम से जानी जाती थी, ﴾4﴿ मस्जिदे सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, (येह मस्जिद दौरे सह़ाबा में न थी, इस की कोई तारीख़ मन्क़ूल नहीं, कहा जाता है कि 1329 हि. (1911 ई.) के बा'द बनाई गई है) ﴾5﴿ मस्जिदे सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ, ﴾6﴿ मस्जिदे अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ मस्जिदे ग़मामा

मक्कए मुकर्रमा या जद्दा शरीफ़ से जब मदीनए मुनव्वरा आते हैं तो मस्जिदे नबवी शरीफ़ आने से क़ब्ल ऊंचे क़ुब्बों (गुम्बदों) वाली एक निहायत ही ख़ूब सूरत मस्जिद आती है येही "मस्जिदे ग़मामा" है। हमारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 2 हि. में पहली बार ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा की नमाज़ इस मक़ाम पर खुले मैदान में अदा फ़रमाई है। यहीं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारिश के लिये दुआ फ़रमाई, दुआ फ़रमाते ही बादल घिर गए और बारिश बरसनी शुरूअ़ हो गई। "बादल" को अ़रबी ज़बान में ग़मामा कहते हैं इसी निस्बत से इसे अब मस्जिदे ग़मामा कहते हैं। यहां खुला मैदान था, पहली सदी के मुजद्दिद, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने यहां मस्जिद ता'मीर करवा दी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ मस्जिदे इजाबा

येह मस्जिदे मुबारक मदीनए मुनव्वरा की क़दीम तरीन 9 मसाजिद में से एक है जो कि शारेए़ मलिक फ़ैसल (पुराना नाम शारेए़ सित्तीन या पहले

त़रीक़े दाइरी Round about) पर जन्नतुल बक़ीअ़ की शिमाल मशरिक़ी जानिब (शारेए़ सित्तीन और शारेए़ मलिक अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के चौक की उलटी त़रफ़) वाक़ेअ़ है। इस मक़ाम पर एक बार हमारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और "तीन दुआ़एं" फ़रमाईं इन में से दो क़बूल हुईं और एक से रोक दिया गया। वोह तीन दुआ़एं येह थीं : ﴿1﴾ या **अल्लाह** ! मेरी उम्मत क़ह़त़ साली के सबब हलाक न हो। (क़बूल हुई) ﴿2﴾ या **अल्लाह** ! मेरी उम्मत पानी में डूब कर हलाक न हो। (क़बूल हुई) ﴿3﴾ या **अल्लाह** मेरी उम्मत आपस में न लड़े। (रोक दिया गया) (مسلم، ص1544، حدیث:2890)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴿6﴾ मस्जिदे सुक़्या

येह मस्जिद शरीफ़, अ़जाइब घर के क़रीब मदीनए मुनव्वरा के रेल्वे स्टेशन के इह़ाते में है, मस्जिदे सुक़्या उस तारीख़ी मक़ाम पर बनाई गई थी जहां येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ हुवा था चुनान्चे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइ़य्यत में हम मदीनए त़य्यिबा से निकले। जब सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के ह़र्रतुस्सुक़्या के क़रीब पहुंचे तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी त़लब फ़रमाया, वुज़ू कर के क़िब्ला रू खड़े हो कर अहालियाने मदीनए बा सकीना के लिये इस त़रह़ ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** पाक ! इब्राहीम तेरे बन्दे और ख़लील थे, उन्हों ने मक्के वालों के लिये बरकत की दुआ़ फ़रमाई थी और मैं तेरा बन्दा और रसूल हूं तुझ से अहले मदीना के लिये दुआ़ करता हूं कि

इन के **मुद** और **साअ़** (येह दो पैमानों के नाम हैं, इन) में अहले मक्का की निस्बत दो गुना बरकत अ़ता फ़रमा। (ترمذی، 5/482، حدیث:3940)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿7﴾ मस्जिदे सजदा

''मस्जिदे सजदा'' उस मुक़द्दस मक़ाम पर वाक़ेअ़ है जहां एक मशहूर वाक़िआ़ हुवा था। चुनान्चे मक्तबतुल मदीना की 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**'' सफ़ह़ा 496 पर है : ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सजदे में त़शरीफ़ ले गए, आप ने सजदा इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं **अल्लाह** पाक ने रूह़े मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो ! चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा, जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ? : मैं ने जवाबन अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : जिब्रईले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) ने मुझ से कहा : ''क्या आप को येह बात ख़ुश नहीं करती कि **अल्लाह** पाक फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाउंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल फ़रमाउंगा।'' (مسند احمد، 1/406، حدیث:1662) बत़ौरे यादगार इस मक़ामे पुर अन्वार पर ''मस्जिदे सजदा'' बना दी गई थी। आज कल वोह जदीद ता'मीर के साथ मौजूद तो है मगर वहां आवेज़ां तख़्ती पर ''मस्जिदे अबू ज़र'' लिखा हुवा है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ मस्जिदे ज़िबाब (या मस्जिदे राया)

''सनिय्यतुल वदाअ़ '' से जबले उहुद की त़रफ़ जाते हुए उलटे हाथ पर मदीनए मुनव्वरा से शिमाल (NORTH) की त़रफ़ ''ज़िबाब'' नामी पहाड़ पर ग़ज़वए तबूक से वापसी पर या बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ ''ग़ज़वए ख़न्दक़'' के मौक़अ़ पर सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ैमा शरीफ़ नस्ब किया गया था। रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ''जबले ज़िबाब'' पर नमाज़ भी अदा फ़रमाई है। (جذب القلوب، ص136-137، وفاء الوفاء، 2/875) इस मुबारक पहाड़ पर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बत़ौरे यादगार एक मस्जिद बनाई जिसे ''मस्जिदे ज़िबाब'' या ''मस्जिदे राया'' कहा जाता है। इसे माज़ी में मस्जिदे क़ुरैन और ''मस्जिदे ज़ाविया'' के नाम से भी पुकारा जाता था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾9﴿ मस्जिदे ऐनैन

येह मस्जिद शरीफ़ मज़ारे ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه के दरवाज़ए मुबारका के सामने जानिबे क़िब्ला वाक़ेअ़ पहाड़ ''जबलुर्रुमात'' पर वाक़ेअ़ थी, उहुद के दिन लश्करे इस्लाम के तीर अन्दाज़ इस पर खड़े थे। कहते हैं, ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه को इसी मक़ाम पर बरछी लगी थी। जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मअ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان वहां मुसल्लह़ नमाज़ अदा फ़रमाई थी।''

(وفاء الوفاء، 2/848-849)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾10﴿ मस्जिदे मश्रबा उम्मे इब्राहीम

येह मस्जिद शरीफ़ ह़र्रए शरक़िय्या के क़रीब नख़्लिस्तान (या'नी खजूर के बाग़) में वाक़ेअ़ थी। मश्रबा या'नी बाग़ और उम्मे इब्राहीम से मुराद उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते मारिया क़िबतिय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا हैं, येह इन्ही का बाग़ था और ह़क़ीक़ी मदनी मुन्ने, आ़शिक़ाने रसूल की आंखों के तारे, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुलारे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की विलादते बा सआ़दत यहीं हुई थी। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यहां नमाज़ पढ़ना साबित है। (جذب القلوب، ص127) आज कल येह मुक़द्दस **मश्रबा** या'नी मुबारक बाग़ क़ब्रिस्तान बना हुवा है, क़ब्रिस्तान के दरमियान एक छोटी सी क़दीम मस्जिद है जिस के सेह्न में एक निहायत ही ख़स्ताह़ाल कुंवां है। एक मुअर्रिख़ का बयान है : "मुझे जब भी दाख़िले में काम्याबी मिली, मैं ने इस मस्जिद में तदफ़ीन का सामान पाया है !" मौजूदा चार दीवारी के बाहर पुरानी त़र्ज़ की एक बिग़ैर छत की मस्जिद बना दी गई है। एक मुह़क़्क़िक़ का कहना है कि इस की कोई तारीख़ी ह़ैसिय्यत नहीं अस्ल मस्जिद शरीफ़ मश्रबा (या'नी बाग़ शरीफ़) के अन्दर ही है।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा

येह मस्जिद शरीफ़ ह़र्रए शरक़िय्या के पास "मस्जिदे शम्स" से काफ़ी फ़ासिले पर जानिबे मशरिक़ (EAST) मस्जिदे फ़ज़ीख़ और मश्रबए उम्मे इब्राहीम के दरमियान वाक़ेअ़ थी। सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू क़ुरैज़ा के मुह़ासरे के दौरान इस मस्जिद को नमाज़ के लिये मुक़र्रर किया था। (فتح الباری، 8/106) एक रिवायत के मुत़ाबिक़ "मस्जिदे बनी

कुरैज़ा'' उस मुक़द्दस मक़ाम पर बनाई गई थी जहां 5 हिजरी (627 ई.) में ''ग़ज़वए बनू कुरैज़ा'' के मौक़अ़ पर महबूबे रब्बे अ़र्श صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ''अ़रीश'' (या'नी धूप से बचने के लिये साइबान) नस्ब किया गया था। एक रिवायत के मुताबिक़ क़रीब ही एक ख़ातून का घर था जिस में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी। हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने तौसीअ़ के दौरान इस मुबारक मकान को भी मस्जिद शरीफ़ में शामिल कर लिया था। (جذب القلوب، ص126)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾12﴿ मस्जिदुन्नूर

एक बार हज़रते उसैद बिन हुज़ैर और हज़रते उ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا दोनों दरबारे रिसालत से काफ़ी रात गुज़रने के बा'द अपने घरों को रवाना हुए। अन्धेरी रात में जब रास्ता नज़र नहीं आया तो अचानक हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की **लाठी** रौशन हो गई और येह दोनों उस की रौशनी में चलते रहे। जब दोनों का रास्ता अलग अलग हो गया तो हज़रते उ़ब्बाद बिन बिश्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की लाठी भी रौशन हो गई और दोनों अपनी अपनी लाठी शरीफ़ की रौशनी में अपने अपने घर पहुंच गए। (مسند امام احمد، 4/277، حدیث:12407) जिधर दोनों सहाबी जुदा हुए थे वहां या'नी मस्जिदे नबवी शरीफ़ के शिमाल मशरिक़ी हिस्से में जन्नतुल बक़ीअ़ के उस पार जहां क़बीला बनी अ़ब्दुल अशहल आबाद था, पहली सदी हिजरी के मुजद्दिद अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने ''मस्जिदुन्नूर'' ता'मीर करवाई थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾13﴿ मस्जिदे फ़स्ह़

जबले उहुद के दामन में ''शअ़बे जर्रार'' की जानिब एक छोटी सी मस्जिद है। ग़ज़वए उहुद के मशहूर व मा'रूफ़ कमसिन मुजाहिद ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां चन्द नमाज़ें अदा की थीं। (تاریخ المدینۃ المنورہ لابن شبہ، 57/1) मत़री के क़ौल के मुत़ाबिक़ ''ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें यहां अदा फ़रमाई थीं।'' (وفاء الوفاء، 848/2) बा'ज़ मुअर्रिख़ीन के नज़दीक ग़ज़वए उहुद में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ख़्महाए मुबारका यहां धोए गए थे इस लिये येह ''मस्जिदे ग़ुस्ल'' के नाम से भी जानी जाती थी। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने बहुत साल पहले उस मक़ाम पर मस्जिद का एक खन्डर देखा था जिस के गिर्द लोहे के ख़ारदार तार लगे हुए थे। ग़ालिबन येह ''मस्जिदे फ़स्ह़'' ही थी। येह हमारे मक्की मदनी सरकार, صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सजदा गाह की यादगार है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ मस्जिदे बनी ज़फ़र (या मस्जिदे बग़ला)

जन्नतुल बक़ीअ़ के शरक़ी जानिब (या'नी EAST में) ह़र्रए शरक़िय्या की त़रफ़ ''औस'' नामी क़बीले की एक शाख़ ''कबीलए बनी ज़फ़र'' आबाद था, येह ''मस्जिदे बनी ज़फ़र'' वहां थी, इसे मस्जिदे बग़ला (या'नी ख़च्चर वाली मस्जिद) भी कहा जाता है। वहां सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक चट्टान पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से तिलावत सुनी थी और इस क़दर रोए थे कि दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो गई थी। (معجم کبیر، 243/19، حدیث:546) वोह चट्टान मुबारक तबर्रुकन मस्जिद में रखी गई थी, आ़शिक़ाने रसूल उस की ज़ियारत से

अपनी आंखें ठन्डी करते थे। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि बे औलाद औरतें उस पर बैठ कर दुआ़ करतीं तो औलाद की ने'मत से सरफ़राज़ हो जाती थीं। (جذب القلوب، ص128) वहां और भी तबर्रुकात थे, जिन में एक पथ्थर शरीफ़ पर सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी के ख़च्चर के सुम (या'नी खुर) मुबारक का निशान था, एक पथ्थरे मुनव्वर पर मदीने के ताजवर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोहनी मुबारक और मुक़द्दस उंगलियों के निशानात थे। (جذب القلوب، ص128)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علی مُحَمَّد

﴾15﴿ मस्जिदे माइदा

मस्जिदे बनी ज़फ़र के क़रीब ही "मस्जिदे माइदा" वाक़ेअ़ थी। मन्क़ूल है येह उसी मक़ाम पर बनी थी जिसे सुल्ताने कौनो मकान صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नजरान के नसरानियों के साथ मुबाहले के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था और जिस जगह सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये लकड़ियां गाड़ कर अपनी चादर तान कर साइबान खड़ा किया था और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अहले बैत के हमराह वहां तशरीफ़ लाए थे। एक तारीख़ी रिवायत के मुताबिक़ इस मक़ाम पर आक़ाए नामदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अहले बैते अत़्हार के लिये जन्नत से "पांच पियालों" में खाना नाज़िल हुवा था। इस लिये इसे "मस्जिदे पन्ज पियाला" भी कहते हैं। यहां आ़शिक़ाने रसूल ने बत़ौरे यादगार गुम्बद बनाए थे। 1400 हि. में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने इस मुक़द्दस मक़ाम के खन्डर की ज़ियारत की थी, गुम्बद वग़ैरा मौजूद नहीं थे, आ़शिक़ाने रसूल के लिये उन फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर के इश्क़े रसूल में दिल जलाना भी बहुत बड़ी सआ़दत है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علی مُحَمَّد

﴾16﴿ मस्जिदे बनी ह़राम

येह मस्जिद शरीफ़ ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के उसी मकाने आ़लीशान की जगह पर आ़शिक़े रसूल, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने बनवाई थी, जहां सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह तीन मो'जिज़ात ज़ाहिर हुए थे : ﴾1﴿ एक बकरी में बहुत सारे (एक रिवायत के मुत़ाबिक़ 1500) सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का पेट भर गया था, ﴾2﴿ सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हड्डियों पर दस्ते मुबारक रख कर कुछ पढ़ा तो बकरी ज़िन्दा हो गई थी, ﴾3﴿ ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के फ़ौत शुदा दो मदनी मुन्ने सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ज़िन्दा हो गए थे। (इन ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त की तफ़्सील "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 345 ता 349 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये) इसी मकाने अ़ज़ीमुश्शान में सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक नमाज़ भी अदा फ़रमाई थी। येह मस्जिद शरीफ़, मस्जिदे नबवी शरीफ़ से ख़म्सा मसाजिद जाते हुए "अस्सीह़" के अ़लाक़े में सड़क के सीधे हाथ पर उस बस्ती के अन्दर वाक़ेअ़ है जो कि जबले सल्अ़ के दामन में आबाद है। 1409 हि. में क़दीम बुन्यादों पर यहां शानदार मस्जिद बना दी गई है मगर बाहर मुल्कों से आए हुए हुज्जाज व मो'तमिरीन अकसर इस के दीदार से मह़रूम ही रहते हैं क्यूं कि इसे आबादी के अन्दर जा कर तलाश करना दुशवार है।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ मस्जिदे शैख़ैन

मस्जिदे नबवी शरीफ़ से मज़ारे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ पर जाते हुए उलटे हाथ पर दूर ही से येह मस्जिद शरीफ़ नज़र आ जाती है। इस मुबारक मक़ाम

को बहुत सारी मदनी निस्बतें ह़ासिल हैं मसलन ﴾1﴿ ग़ज़वए उहुद के लिये जाते हुए सरकारे दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां पहला पड़ाव फ़रमाया और रात का कुछ हिस्सा गुज़ारा था ﴾2﴿ यहां आक़ाए मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक या दो नमाज़ें अदा फ़रमाई थीं ﴾3﴿ इसी जगह जिस्मे पुर अन्वार पर हथ्यार और ज़िर्हें सजाई थीं ﴾4﴿ यहां जंगी तय्यारियों का मुआ़यना और मुजाहिदीन का इन्तिख़ाब फ़रमाया था और कई मदनी मुन्नों को वापस लौटाया था ﴾5﴿ यहीं मदनी मुन्ने ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه बड़े नज़र आने के लिये पांव की उंगलियों पर खड़े हो गए थे तो बारगाहे रह़मत से इजाज़त मिल गई थी, इस पर एक और मदनी मुन्ने समुरा बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की थी कि मैं राफ़ेअ़ से ज़ियादा त़ाक़तवर हूं, फिर दोनों में कुश्ती हुई और समुरा ग़ालिब आ गए थे और साथ चलने की इजाज़त पा गए थे। इस मस्जिद शरीफ़ को ''मस्जिदुश्शैख़ैन'' कहने की वजह येह है कि यहां एक बूढ़े अन्धे यहूदी और अन्धी यहूदन बूढ़िया के जुदा जुदा दो क़ल्ए़ थे। बूढ़े को अ़रबी में ''शैख़'' कहते हैं इस वजह से वोह आबादी दो बूढ़ों के सबब ''अश शैख़ैन'' के नाम से मश्हूर थी। इस मस्जिद शरीफ़ के और भी नाम हैं : ﴾1﴿ मस्जिदे दिर्अ़ ﴾2﴿ मस्जिदे बदाइअ़ और ﴾3﴿ मस्जिदे अ़दवी। आज कल औक़ाफ़े मदीना की त़रफ़ से जदीद त़र्ज़ पर ता'मीर कर के इस का नाम ''मस्जिदे ख़ैर'' रखा गया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾18﴿ मस्जिदे मिस्तराह़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे शैख़ैन से थोड़े ही फ़ासिले पर उहुद शरीफ़ की त़रफ़ जाते हुए ऐ़न सड़क पर वाक़ेअ़ है। इब्तिदाए इस्लाम में

इसे ''मस्जिदे बनी ह़ारिसा'' कहा जाता था क्यूं कि वहां क़बीलए बनी ह़ारिसा (औसी) आबाद था। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ एक सह़ाबी (ह़ारिस बिन सा'द बिन उ़बैदुल ह़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) फ़रमाते हैं : ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारी मस्जिद में नमाज़ अदा फ़रमाई थी।'' (وفاء الوفاء، 2/865) सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वए उहुद से वापसी पर यहां थोड़ी देर इस्तिराह़त या'नी आराम फ़रमाया था। इसी लिये इसे मस्जिदे मिस्तराह़ कहा जाता है। आज कल यहां आ़लीशान मस्जिद बनी हुई है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾19﴿ मस्जिदे मिस्बह़ (या मस्जिद बनी उनैफ़)

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे कुबा के सामने वाले अ़लाक़े में वाक़ेअ़ है। मस्जिदे कुबा के सामने सर्विस रोड पर आबादी के अन्दर की त़रफ़ दाख़िल हों तो आगे चल कर ''मुस्तौ दआ़तुल ग़स्सान'' के फ़ौरन बा'द एक ख़स्ता ह़ाल मस्जिद शरीफ़ की ग़ैर मुसक़्क़फ़ (या'नी बिग़ैर छत के) चार दीवारी नज़र आती थी जिस के अत़राफ़ में मलबे का ढेर भी देखा गया है। (ख़ुदा जाने ता दमे तह़रीर वोह मस्जिद शरीफ़ किस ह़ाल में है !) क़बीलए बनी उनैफ़ के लोग यहां आबाद थे, इस मक़ाम पर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जम्अ़ हो कर सरकारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मक्का शरीफ़ से आमद का इन्तिज़ार किया करते थे, आख़िरे कार इन की मुराद बर आई और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब सूरते हिजरत तशरीफ़ आवरी हो गई। इसी मक़ाम पर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत के बा'द पहली नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई थी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾20﴿ मस्जिदे बनी ज़ुरैक़

बैअ़ते उ़क़्बए अव्वल में ईमान लाने के बा'द ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने **अल्लाह** के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मदीनए मुनव्वरा में वुरूदे मसऊ़द से क़ब्ल ही येह मस्जिद शरीफ़ बना ली थी और ईमान लाने वाले ह़ज़रात वहां नमाज़ पढ़ते और अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बारगाहे रिसालत से उस वक़्त तक का नाज़िल शुदा क़ुरआने करीम का जो ह़िस्सा इ़नायत हुवा था उस की तिलावत करते थे । सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस मस्जिद में दाख़िल हुए हैं । (وفاء الوفا، 2/857) मस्जिदे ज़ुरैक़ मस्जिदे ग़मामा और मौजूदा कोर्ट के दरमियानी ह़िस्से में किसी जगह पर वाक़ेअ़ थी, आ़शिक़ाने रसूल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वहां की फ़ज़ाओं को निगाहों से चूम कर बरकतें ह़ासिल करें ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾21﴿ मस्जिदे क़तीबा

मदीनए मुनव्वरा के अव्वलीन अन्सारी सह़ाबी ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ बिन मालिक ज़ुरैक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ग़ज़वए उ़ह़ुद में शहीद हो गए। मुबारक लाश की आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मकाने आ़लीशान ही में तदफ़ीन की गई । बा'द में ख़ानदान वालों ने उस मकाने बरकत निशान पर इस त़रह़ मस्जिद ता'मीर की, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मज़ारे पुर अन्वार सह़न में आ गया । सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم का मश्हूर सिलसिलए त़रीक़त "सनौसिया" आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ही की औलाद से जारी हुवा है । इस मस्जिद शरीफ़ के क़रीब उ़समानियों (तुर्कों) ने आ़रिज़ी फ़ौज़ी बैरकें बनवाई हुई थीं, चूंकि अ़रबी में फ़ौज़ी बटालियन या यूनिट को "कतीबा" कहते हैं इस लिये वोह अ़लाक़ा

''कतीबा'' कहलाने लगा और इसी वजह से उस मस्जिद शरीफ़ को ''मस्जिदुल कतीबा'' कहा जाने लगा। येह मस्जिद मअ़ एक क़दीम मीनार इस तह़रीर से चन्द साल क़ब्ल तक बाक़ी थी, पन्ज वक़्ता नमाज़ों की भी तरकीब थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾22﴿ मस्जिदे बनी दीनार

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरा में ख़ानदाने बनी दीनार बिन नज्जार की एक ख़ातून से शादी फ़रमाई, एक बार उन्हों ने सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दा'वत पेश की और तशरीफ़ ला कर नमाज़ अदा कर के घर को मुनव्वर करने की इल्तिजा की। शरफ़े क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ी मिली और वहां क़दम रंजा फ़रमा कर शहनशाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई। (وفاءالوفا،2/866) इसी मकाने आ़लीशान पर उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने बतौ़रे यादगार ''मस्जिदे बनी दीनार'' बनवाई। बा'द में अ़लाक़ए बनी दीनार में धोबियों की आबादी हो गई, वहां धोबी घाट बन गए, जिस से वोह मह़ल्ला ''अ़लाक़ए ग़स्सालीन'' मश्हूर हुवा और येह मस्जिद, ''मस्जिदे ग़स्सालीन'' कहलाने लगी। आज कल इसे ''मस्जिदे मुग़ैसला'' कहते हैं। इस मस्जिद शरीफ़ का नया मह़ले वुक़ूअ़ या'नी पता : मह़ल्लतुल मालिह़, मद्रसा अ़स्करिया के पीछे आबादी में तक़रीबन आधा किलो मीटर अन्दर की त़रफ़ है। अब इस तारीख़ी मुतबर्रक मस्जिद के क़रीब जदीद सहूलतों से आरास्ता एक बड़ी मस्जिद बना दी गई है। जिस की वजह से इस मुबारक मस्जिद की त़रफ़ लोगों का

रुज्ह़ान कम है और इस की अस्ल ह़ैसिय्यत पर गुमनामी की धुन्दलाहट छा रही है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

﴾23﴿ मस्जिदे मीनारतैन

ह़ज़रते ह़राम बिन सा'द बिन मुह़य्यिसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मक़ाम पर नमाज़ पढ़ी थी। (وفاء الوفاء، 2/878-879) आ़शिक़ाने रसूल ने बत़ौरे यादगार यहां "मस्जिदे मीनारतैन" ता'मीर फ़रमाई। इस का पता येह है : मस्जिदे नबवी शरीफ़ से शारेए़ अ़म्बरिय्या (क़दीम नाम शारेए़ मक्का) से हो कर वादिये अ़क़ीक़ की त़रफ़ जाएं तो तक़रीबन आधे किलो मीटर के फ़ासिले पर पेट्रोल पम्प आएगा, इस से थोड़ा सा आगे सीधे हाथ पर एक खुला मैदान है जहां अब एक बहुत बड़ी मस्जिद बनाई गई है, जिसे "मस्जिदे मीनारतैन" ही के नाम से पुकारा जाता है।

मरी हुई बकरी

येह मशहूर वाक़िआ़ भी "मस्जिदे मीनारतैन" वाले मक़ाम की त़रफ़ गुज़रते हुए हुवा था। चुनान्चे एक मरतबा शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के हमराह इसी मक़ाम से गुज़र रहे थे। अचानक ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे मुबारका एक मुर्दा बकरी पर पड़ी जिस से बदबू आ रही थी, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने नाक पर कपड़े डाल लिये जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस बकरी का अपने मालिक पर क्या असर देखते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह क्या असर दिखा सकती

है ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के सामने येह दुन्या इस से भी हल्की है जितना येह बकरी अपने मालिक के लिये हल्की है। (وفاء الوفاء، 2/878)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾24﴿ मस्जिदे जुमुआ़

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे कुबा से मस्जिदे नबवी शरीफ़ की त़रफ़ जाते हुए सीधे हाथ पर आती है। हिजरते मुबारका के मौक़अ़ पर कुबा शरीफ़ से फ़ारिग़ हो कर मह़बूबे रब्बुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मअ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आ़जिमें मदीना हुए और येह जुलूस मुबारक जब "बनी सालिम" के अ़लाक़े से गुज़रा तो मक़ामी ह़ज़रात ने कुछ देर अपने यहां क़ियाम की इल्तिजा की जो मन्ज़ूर कर ली गई। इसी दौरान नमाज़े जुमुआ़ का वक़्त आ गया, तो रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के हमराह बा जमाअ़त पहली नमाज़े जुमुअ़तुल मुबारक अदा फ़रमाई। जहां नमाज़ अदा की गई वहां बा क़ाएदा मस्जिद बना ली गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾25﴿ मस्जिदे मि'रास

येह मस्जिद शरीफ़ मीक़ाते अहले मदीना "ज़ुल ह़ुलैफ़ा" के क़िब्ले की जानिब हुवा करती थी। येह उस मक़्दस जगह पर वाक़ेअ़ थी जहां शहनशाहे काइनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से वापसी पर रात गुज़ारी थी और आराम फ़रमाया था। अब इस मस्जिदे मुबारक की ज़ियारत नहीं हो सकती !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾26﴿ मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा

येह मस्जिद शरीफ़ मस्जिदे नबवी शरीफ़ के जुनूबे मग़रिब में तक़रीबन 9 किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ है। आज कल येह मक़ामे बीरे अ़ली या अब्यारे अ़ली के नाम से मशहूर है और येह अहले मदीनए मुनव्वरा की मीक़ात है। मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा का पुराना नाम "मस्जिदे शजरा" है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा से "शजरा" के रास्ते से बाहर तशरीफ़ ले जाते और मुअ़र्रस के रास्ते से मदीने आते और जब मक्कतुल मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते तो "मस्जिदे शजरा" में नमाज़ पढ़ते थे और जब वापस तशरीफ़ फ़रमा होते तो ज़ुल हुलैफ़ा में नाले के बीच में नमाज़ अदा करते थे, वहीं रात भर क़ियाम रहता यहां तक कि सुब्ह़ होती। (بخاری، 1/516، حدیث:1533) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूले ग़ैबदान आक़ाए दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ुल हुलैफ़ा में रात बसर फ़रमाई और इस की मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। (مسلم، ص607، حدیث:1188) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़िज्जतुल वदाअ़ के लिये तशरीफ़ ले जाते वक़्त ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचे तो वहां मस्जिद में दो रक्अ़त पढ़ीं। (تاریخ المدینۃ المنورہ، ص501-502) अब यहां ब नाम "मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा" एक आ़लीशान मस्जिद क़ाइम है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾27﴿ मस्जिदे क़िब्लतैन

येह मुबारक मस्जिद अल ह़र्रतुल वबरह (अल ह़र्रतुल ग़रबिय्यह) में "वादिये अ़क़ीक़" के "अल अ़रसा" नामी मैदान के क़रीब वाक़ेअ़ है।

मसाजिदे ख़मसा भी वहीं क़रीब ही वाक़ेअ़ हैं। "बीरे रूमा" (या'नी उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का कुंवां) मदीनए मुनव्वरा से जाते हुए इस मस्जिद शरीफ़ के दाएं (या'नी सीधी) जानिब है। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाई है। येह मस्जिदे मुक़द्दस "बनू सुलैम" के नाम से मुतआ़रफ़ थी क्यूं कि यहां क़बीलए बनू सुलैम आबाद था। हिजरत के सत्तरहवें महीने 15 रजबुल मुरज्जब 2 हि. (जनवरी 624 ई.) ब रोज़ शम्बा (या'नी हफ़्ते के रोज़) मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां पर अभी ज़ोहर की दो रक्अ़त अदा फ़रमाई थी कि तह़वीले क़िब्ला का हुक्म नाज़िल हो गया, बक़िय्या दो रक्अ़त बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के अदा फ़रमाईं। इस वजह से इस का नाम मस्जिदे क़िब्लतैन (या'नी दो क़िब्लो वाली मस्जिद) हुवा। बत़ौरे यादगार आ़शिक़ाने रसूल ने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ दीवार में क़िब्ले का निशान बना दिया था और इस में "आयाते तह़वीले क़िब्ला" नक़्श कर दी थीं, आ़शिक़ीने ज़ाइरीन इस निशान को भी मस कर के बरकत ह़ासिल करते थे। अब वोह दीवार शरीफ़ हटा दी गई है और सद्र दरवाज़े की जानिब छत पर क़िब्लए अव्वल की सम्त के इज़्हार के लिये मुसल्ले का नक़्श बना दिया गया है।

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
﴾1﴿ मस्जिदे कुबा	2	﴾14﴿ मस्जिदे बनी ज़फ़र (या मस्जिदे बग़ला)	11
उ़मरे का सवाब	3	﴾15﴿ मस्जिदे माइदा	12
फ़ारूक़े आ'ज़म और कुबा	3	﴾16﴿ मस्जिदे बनी ह़राम	13
अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और कुबा	3	﴾17﴿ मस्जिदे शैख़ैन	13
﴾2﴿ मस्जिदे फ़ज़ीख़	3	﴾18﴿ मस्जिदे मिस्तराह़	14
﴾3﴿ ख़म्सा (या सब्आ़) मसाजिद	4	﴾19﴿ मस्जिदे मिस्बह़ (या मस्जिद बनी उनैफ़)	15
﴾4﴿ मस्जिदे ग़मामा	5	﴾20﴿ मस्जिदे बनी ज़ुरैक़	16
﴾5﴿ मस्जिदे इजाबा	5	﴾21﴿ मस्जिदे कतीबा	16
﴾6﴿ मस्जिदे सुक़्या	6	﴾22﴿ मस्जिदे बनी दीनार	17
﴾7﴿ मस्जिदे सजदा	7	﴾23﴿ मस्जिदे मीनारतैन	18
﴾8﴿ मस्जिदे ज़िबाब (या मस्जिदे राया)	8	मरी हुई बकरी	18
﴾9﴿ मस्जिदे ऐ़नैन	8	﴾24﴿ मस्जिदे जुमुआ़	19
﴾10﴿ मस्जिदे मश्रबा उम्मे इब्राहीम	9	﴾25﴿ मस्जिदे मि'रास	19
﴾11﴿ मस्जिदे बनी क़ुरैज़ा	9	﴾26﴿ मस्जिदे ज़ुल ह़ुलैफ़ा	20
﴾12﴿ मस्जिदुन्नूर	10	﴾27﴿ मस्जिदे क़िब्लतैन	20
﴾13﴿ मस्जिदे फ़स्ह़	11		

अगले हफ़्ते का रिसाला